18

भ्वादिप्रकरण में - लिट् लकार का सूत्रशेष

तिङन्त प्रकरण में भू धातु को प्रस्तुत करके लकारशः सूत्र उपस्थित किये गये हैं। इसमें लिट् लकार में मुख्य विषय इट् आगम व्यवस्था का पूर्वपाठ में सविस्तार वर्णन किया गया है। इस पाठ में लिट् लकार के कुछ शेष सूत्रों का समावेश किया है। कुछ धातुओं के अभ्यास लोप, अकार का एत्व होता है।

मूल धातु से दूसरे प्रत्यय का विधान करके सनाद्यन्ता धातवः सूत्र से समुदाय की धातु संज्ञा होती है। वे सन् आदि 12 (बारह) है। इस प्रकार यदि धातु अनेकाच् होती है तो लिट् में धातु से कृ भू अस् इन तीन धातुओं का अनुप्रयोग होता है। यह अनुप्रयोग ही लिट् लकार की दूसरी विशेषता है। इस प्रकार अन्य कुछ सूत्र है जो अग्रिम प्रकरण में उपस्थापित है वे भी इस पाठ में प्रस्तुत किये गये हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप-

- तिङन्त प्रकरण के लिट् लकार में मुख्य सूत्रों का जानेंगे;
- विभिन्न धातुओं को लिट् में सिद्ध कर सकेंगे;
- विविध सूत्रों की व्याख्या करने में समर्थ होंगे;
- पूर्व पाठ में कि गई सार्वधातुक, आर्धधातुक संज्ञा के रूप में प्रभाव को जानेंगे;
- भू धातु रूप को सिद्ध करके शेष बहुत से लकार में विशेषकर लिट् में प्रयुक्त सूत्रों को जानेंगे;
- रहस्यमयी इट् आगम प्रकरण को इस पाठ में जानेंगे।

18.1 अत एकहल्मध्येऽनादेशादिर्लिटि॥ (6.4.120)

सूत्रार्थ - लिट् को निमित्त मानकर जिस अंग के आदि में कोई आदेश नहीं हुआ उस अंग के, असंयुक्त हलों के मध्य में स्थित अत् के स्थान पर एकार आदेश हो जाता है और साथ ही अभ्यास का लोप भी हो जाता है कित् लिट् परे हो तो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से अभ्यास का लोप और अत् को एकार का विधान किया जाता है। इस सूत्र में चार पद हैं। अतः, एक, हल्मध्ये, अनादेशादेः, लिटि यह सूत्रगत पदच्छेद है। अतः (6/1), एकहल्मध्ये (7/1), अनादेशादेः (6/1), लिटि (7/1)। अंगस्य (6/1) का अधिकार है। ध्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च सूत्र से एत् (1/1), अभ्यासलोपः (1/1), च अव्ययपद इन तीन पदों की अनुवृत्ति है। गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि सूत्र से किति (7/1) पद आता है। नास्ति आदेशः आदिः यस्य तद् अनादेशादि अंगम्, तस्य अनादेशादेः इति बहुब्रीहिसमासः। एकयोः हलोः मध्ये इति एकहल्मध्ये इति षष्ठीतत्पुरूष समासः। यहाँ लिटि पद् की आवृत्ति होती है। पदयोजना होती है-लिटि अनादेशादेः अंगस्य एकहल्मध्ये अतः, एत् अभ्यासलोपः च किति लिटि। सूत्रार्थ होता है - लिट् को मानकर जिसके आदि में कोई आदेश न हुआ हो ऐसे अंग के अवयव, असंयुक्त हलों के मध्य में रहने वाले अत् के स्थान पर एकार आदेश हो जाता है तथा अभ्यास का लोप भी हो जाता है, कित् लिट् परे हो तो।

अभ्यास का लोप और अकार को एकार ये दो कार्य इस सूत्र से होते हैं। अंग के अत् से पूर्व अथवा परे यदि संयोग न हो तो उस अत् को एत् होता है। लिट् को निमित्त करके अंग को आदेश न हो। लिट् परे रहते जो कार्य होते हैं उनमें हलादि शेष यहां गणनीय है। इसी प्रकार अभ्यासे चर्च से यदि आदेश में होने पर भी विरूप नहीं होता है तो वह आदेश नहीं गणनीय है। जैसे तप् धातु से अभ्यास में तप् तप् स्थिति में अभ्यासे चर्च से तकार को तकार ही करता है। अतः उससे वैरूप्य नहीं होता है। अतः इस प्रकार का आदेश, आदेश नहीं है।

उदाहरण - नेदतुः। नेदुः।

सूत्रार्थ समन्वय - णद अव्यक्ते शब्दे धातु में णोपदेश धातु को धात्वादेः णो नः सूत्र से नकार होकर नद् होता है। उसके बाद लिट् में तिप्, तिप् के स्थान पर णल् तथा अनुबन्ध लोप होकर नद्+अ स्थिति में धातु को द्वित्व तथा अभ्यास कार्य होकर न+नद्+अ स्थिति में अत उपधायाः से उपधा को वृद्धि होकर **ननाद** रूप सिद्ध होता है।

लिट् लकार में प्रथमपुरूष द्विवचन के तस् प्रत्यय के स्थान परे अतुस् होकर नद्+अतुस् स्थिति बनती है। द्वित्व होकर नद्+नद्+अतुस् स्थिति में अभ्यास संज्ञा और हलादि शेष होकर न+नद्+अतुस् यहां लिट् के निमित्त कोई आदेश नहीं है। अनभ्यास के नद् को अत् असंयुक्तहल्मध्यस्थ है। अर्थात् अत् से पूर्व एवं परे में संयोग नहीं है। अतः प्रकृत सूत्र से अभ्यास लोप एवं अत् का एकार होकर नेद्+अतुस् तथा सकार को विसर्ग होकर **नेदतुः** रूप सिद्ध होता है। अन्य रूप इसी प्रकार बनेंगे।

इसी प्रकार पठ् से पठेतुः, चर् से चेरतुः, चल् से चेलतुः, तप् से तेपतुः, तन् से तेनतुः, पत् से पेततुः, नद् से नेदतुः, नम् से नेमतुः, एवं जप् से जेपतुः रूप बनता है। अन्य रूप इसी प्रकार बनेंगे।

टिप्पणियाँ

18.2 थलि च सेटि॥ (6.4.121)

सूत्रार्थ - सेट् थल् परे होने पर लिट् निमित्तिक आदेश नहीं होता है उस अंग के अवयव को असंयुक्तहल्मध्यस्थ अत् को एकार एवं अभ्यास लोप हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से एकार एवं अभ्यास लोप होता है इस सूत्र में तीन पद है। थलि (7/1), च अव्ययपद, सेटि (7/1)। अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि सूत्र से अतः (6/1) एकहल्मध्ये (7/1) अनादेशादेः (6/1) लिटि (7/1) पदों की अनुवृत्ति है। अंगस्य (6/1) का अधिकार है। ध्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च सूत्र से एत् (1/1), अभ्यासलोपः (1/1), च अव्ययपद इन तीनों पदों की अनुवृत्ति होती है। इटा सह वर्तते स सेट् तस्मिन् सेटि। नास्ति आदेशः आदिः यस्य तद् अनादेशादि अंगम्, तस्य अनादेशादेः इति बहुव्रीहिसमासः। एकयोः हलोः मध्ये इति एकहल्मध्ये इति षष्ठीपुरूष समासः। पदयोजना - लिटि अनादेशादेः अगंस्य एकहल्मध्ये अतः एत् अभ्यासलोपः च सेटि थलि। सूत्रार्थ होता है - लिट् को मानकर जिस के आदि में कोई आदेश नहीं हुआ ऐसा जो अंग, उस के अवयव असंयुक्त हलों के मध्य में स्थित अत् के स्थान पर एकार आदेश और अभ्यास का लोप हो जाता है यदि इट् सहित थल् परे हो तो। थल् कित् नहीं अतः पूर्वसूत्र से एत्व तथा अभ्यासलोप प्राप्त नहीं होता। इसलिए यह सूत्र बनाना पड़ा।

उदाहरण - नेदिथ

सूत्रार्थ समन्वय - इस प्रकार पूर्वोक्त सूत्र से नद् धातु से लिट् में सिप् प्रत्यय उसके स्थान पर थल् को इट् आगम होकर द्वित्व एवं अभ्यास कार्य होकर न+नद्+इथ स्थिति में इस सूत्र में अत् को ए एवं अभ्यासलोप होकर नेद्+इथ **नेदिथ** रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न 18.1

1. नेद रूप में एकार किस सूत्र से होता है?
2. नेदिथ रूप में एकार किस सूत्र से होता है?
3. थलि च सेटि सूत्र का अर्थ लिखिए।
4. नेदिथ में कौनसा लकार एवं तिङ् है।

   1. लिट् थस् 2. लट् थ 3. लिट् सिप् 4. लट् थस्।

18.3 गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः॥ (3.1.28)

सूत्रार्थ - गुप्, धूप्, विच्छ्, पण् और पन धातुओं से स्वार्थ मे आय प्रत्यय हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से आय प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। गुपधूपविच्छिपणिपनिभ्यः (5/3), आयः (1/1)। धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमाभिहारे यङ् सूत्र

से धातोः यह पद आता है। उसका पंचमीबहुवचनान्त से विपरिणाम होता है। प्रत्ययः (3.1.1) और परश्च (3.1.2) का अधिकार है। गुपूः च धूपः च विच्छिः च पणिः च पनिःच इति गुपूधूपविच्छिपणि पनयः। तेभ्यः गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्यः इति इतरेतरयोग द्वन्द्वसमासः। यह सूत्र प्रत्यय के अधिकार में पढ़ा गया है उससे आय प्रत्यय होता है। पदयोजना - गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्यः धातुभ्यः आयः प्रत्ययः परः। सूत्रार्थ होता है - गुप्, धूप्, विच्छ् पण् एवं पन् इन धातुओं से परे आय प्रत्यय होता है। आय प्रत्यय अदन्त है। धातु से विहित तिङ् भिन्न और शित् भिन्न है। अतः आर्धधातुकं शेषः से उसकी आर्धधातुक संज्ञा होती है।

इस प्रत्यय का कोई अर्थ निर्दिष्ट नहीं है। अतः यह अनिदिर्ष्टार्थ प्रत्यय है। जिन प्रत्ययों के अर्थ का निर्देश नहीं किया जाता वे प्रत्यय स्वार्थ में होते हैं। उससे आय प्रत्यय स्वार्थ है। यह गुप् धातु से आय विहित उसकी प्रकृति गुप् धातु ही हो, जो अर्थ गुप् धातु का उसी अर्थ में आय प्रत्यय होता है।

सूत्र में गुपू रक्षणे - गोपायति (भ्वादिग, प.प.) धूप सन्तापे- धूपायति (भ्वादिगण, प.प.), विच्छ गतौ- विच्छायति (तुदा. प.प.) पण व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वादिगण, आ.प.) यहां स्तुति अर्थक ही ग्राह्य है, पन स्तुतौ (भ्वादिगण, आ.प.) पणायते।

उदाहरण - गोपायति

सूत्रार्थसमन्वय- गुपू रक्षणे रक्षणार्थक ऊदित गुप् धातु से गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः सूत्र से आय प्रत्यय होकर गुप्+आय। आर्धधातुकं शेषः से आय की आर्धधातुक संज्ञा होने से पुगन्तलघूपधस्य च सूत्र से गकारोत्तर उकार को गुण ओकार होकर गोप्+आय=गोपाय शब्द बनता है। आय प्रत्यय सन् आदि है अतः सनाद्यन्ता धातवः सूत्र से समुदाय की धातु संज्ञा होती है।

उसके बाद वर्तमाने लट् से लट्, तिप्, शप् आदि होकर गोपाय+अ+ति अतोगुणे से पररूप होकर गोपायति रूप सिद्ध होता है। अन्यरूप भी इसी प्रकार सिद्ध होते है कोई विशेष कार्य नहीं होता।

गुप् धातु से लट् में रूप- गोपायति, गोपायतः, गोपायन्ति। गोपायसि, गोपायथः, गोपायथ। गोपायामि, गोपायावः, गोपायामः।

18.4 आयादय आर्धधातुके वा॥ (3.1.31)

सूत्रार्थ - आर्धधातुक प्रत्यय कहने की इच्छा हो तो आय आदि प्रत्यय विकल्प से हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से विकल्प से आय प्रत्यय होता है। इस सूत्र में तीन पद है। आयादयः (1/3), आर्धधातुके (7/1), वा अव्ययपद। आयः आदिः येषां ते आयादयः इति बहुव्रीहिसमासः। आय, ईयङ्, णिच् ये तीन आयादि है। यह सूत्र प्रत्यय के अधिकार में पठित है। अतः प्रत्यय पद आता है। प्रत्यये इस सप्तम्यन्त से विपरिणमत है। सूत्रार्थ होता है - आर्धधातुक प्रत्यय की विवक्षा में आयादि प्रत्यय विकल्प से होते है।

टिप्पणियाँ

आय विधान से पूर्व आर्धधातुक का विधान नहीं होता है। आर्धधातुक के बिना आर्धधातुक परे आय विधान को कहना व्याघात है। अतः यहां आर्धधातुके यह परसप्तमी न होकर विषयसप्तमी है। उससे आगे आर्धधातुक विधेय यह विवक्षा हो तो आयादि विकल्प से होते हैं।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय -गुप् धातु से अनद्यतन भूत परोक्ष वृत्ति की विवक्षा में परोक्षे लिट् से लिट्, लिट् च सूत्र से लिट् आदेश तिङ् आर्धधातुक संज्ञक है। अतः गुप् धातु से आर्धधातुक विधान की विवक्षा है। अतः आयादय आर्धधातुके वा सूत्र से विकल्प में आय प्रत्यय होकर गुप्+आय यहां आय की आर्धधातुक संज्ञा तथा पुगन्तलघूपधस्य च से गकारोत्तर उकार को गुण ओ होकर गोपाय बनता है। सनाद्यन्ता द्यातवः से धातु संज्ञा, इसके बाद परोक्षे लिट् से गोपाय धातु से लिट् प्रत्यय होकर गोपाय+लिट् स्थिति बनती है। तब -

कास्यनेकाच् आम् वक्तव्यः ॥ (वार्तिक)

वार्तिकार्थ - लिट् परे हो तो कास् धातु तथा अनेकाच् धातु को आम् प्रत्यय होता है।

वार्तिक व्याख्या - इस वार्तिक से कास् धातु तथा अनेकाच् धातु से परे आम् प्रत्यय का विधान होता है यदि लिट् परे हो तो। आम् मान्त है। यदि हलन्त्यम् से मकार की इत्सज्ञा होती है तो मिदचोऽन्त्यात् परः से अन्त्य अच् कास् का आ परे होकर का+आ+स् तथा सवर्ण दीर्घ होकर कास् स्थिति बनती है। जिससे आम् विधान का कोई लाभ नहीं हुआ। अतः कहा जाता है कि आम् के म् की इत्संज्ञा नहीं होती। उसमें मिद्चोडन्त्यात् परः परिभाषा भी प्रवृत्त नहीं होती। जैसा कि उक्ति से कहा है - लिटि आस्कासोराम्विधानान्मस्य नेत्त्यम्।

उदाहरण - पूर्वोक्त सूत्र से गोपाय+लिट् स्थिति में गोपाय अनेकाच् धातु से लिट् है अतः प्रकृत वार्तिक से आम् प्रत्यय होकर गोपाय+आम्+लिट् स्थिति बनती है। तब -

18.5 अतो लोपः॥ (6.4.48)

सूत्रार्थ - आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, आर्धधातुक प्रत्यय के उपदेश के समय जो अदन्त अंग उसके अन्त्य अत् का लोप हो जाता है।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र से अत् के लोप का विधान किया गया है। इस सूत्र में दो पद है। अतः (6/1), लोपः (1/1)। अंगस्य (6/1) का अधिकार है। अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादी नामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति सूत्र से उपदेश पद की अनुवृत्ति करके उसका सप्तम्यन्त से विपरिणाम किया जाता है। आर्धधातुके (7/1) का अधिकार है। उसकी दो बार आवृत्ति कि गई है। सूत्रार्थ होता है - जब आर्धधातुक का उपदेश किया जाता है अर्थात् विधान किया जाता है तब अदन्त अंग का लोप होता है यदि अंग से पर आर्धधातुक हो। अलोऽन्त्यस्य की परिभाषा से अन्त्य अंग के अत् का लोप होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्त सूत्रों से गोपाय+आम्+लिट् स्थिति में आम् आर्धधातुक की उपदेश करते हुए विधान किया गया है। तब गोपाय अदन्त अंग है। उस अदन्त अंग से परे

लिट् आर्धधातुक है। अतः अतो लोपः सूत्र से अन्त्य अंग अल् अत् का लोप होकर गोपाय्+आम्+लिट् स्थिति बनती है। उसके बाद गोपायाम्+लिट् प्राप्त होता है।

(अत् का लोप करने या न करने पर गोपायाम् रूप प्राप्त होता है। अतः यहां अत् के लोप फल स्पष्ट नहीं है अन्य उदाहरण में फल होता है।)

18.6 आमः॥ (2.8.81)

सूत्रार्थ - आम् से परे का लुक् हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र से आम् से लुक् का विधान होता है। इस सूत्र में आमः (5/1) एक पद है। ण्यक्षत्रियार्षितो यूनि लुगणिोः सूत्र से लुक् इस प्रथमान्त की अनुवृत्ति है। सूत्रार्थ होता है - आम् से परे का लुक् होता है। प्रत्ययस्य लुक् श्लु लुपः से प्रत्यय के अदर्शन की लुक् संज्ञा होती है।

उदाहरण - गोपायाम्

सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व सूत्रों से गोपायाम्+लिट् स्थिति में प्रकृतसूत्र आमः से परे लिट् का लुक् होकर गोपायाम् प्राप्त होता है। लिट् कृदतिङ् से कृत् संज्ञक है। गोपायाम् इससे लिट् के लोप में प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् सूत्र से प्रत्यय लक्षण करके गोपायाम् यह कृदन्त रूप है। उसकी कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रतिपादिक संज्ञा उसके बाद स्वौजस.कृ सूत्र से सुप् उत्पत्ति में गोपायाम् सु स्थिति में आमः सूत्र से सु का लोप होकर गोपायाम् शेष रहता है और इसका पुनः प्रत्ययलक्षण करके सुबन्त होने पर सुप्तिङन्तं पदम् से पदसंज्ञा सिद्ध होती है। गोपायाम् इस अवस्था में-

18.7 कृञ् चानुप्रयुज्यते लिटि॥ (3.1.40)

सूत्रार्थ - आमन्त से परे लिट् परक कृञ्, भू, अस् धातुओं का अनुप्रयोग किया जाता है।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र से कृ, भू, अस् धातुओं का अनुप्रयोग किया जाता है। इस सूत्र में चाद पद हैं। कृञ् (1/1), च अव्ययपद, अनुप्रयुज्यते (तिङन्तपद) और लिटि (7/1)। कास्प्रत्ययाद् आम् अमन्त्रे लिटि सूत्र से आम् (1/1) पद की अनुवृत्ति है। आम का पंचम्यन्तता से विपरिणाम होता है। पदयोजना-आमः कृञ् च अनुप्रयुज्यते लिटि। आमः प्रत्ययत्वात् प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राह्य परिभाषा से आमन्तात् प्राप्त होता है। कृञ् प्रत्याहार है। अष्टाध्यायी में कृभ्वस्तियोगे सम्पद्यर्त्तरि च्विः सूत्र में स्थित कृ, से लेकर कृञो द्वितीयतृतीयशम्बजीवात् कृषौ सूत्र में स्थिति ञकार से कृञ् प्रत्याहार होता है। कृञ् प्रत्याहार में कृञ्, भू, अस् ये तीन धातु हैं। सूत्रार्थ होता है - आमन्त से परे लिट् परक कृञ्, लिट्परक भू तथा लिट्परक अस् धातुओं का अनुप्रयोग होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व गोपायाम् स्थिति में गोपायाम् आमन्त शब्द से इस सूत्र द्वारा लिट् परक कृञ् अनुप्रयुक्त हो तो गोपायाम्+कृ+लिट् स्थिति बनती है। गोपायाम् शब्द से लिट् का

टिप्पणियाँ

लुक् हो गया था। अब पुनः कृ धातु से परे लिट् का आगम। प्रथम पुरूष एकवचन की विवक्षा में लिट् के स्थान पर तिप् उसको णल् होकर गोपायाम्+कृ+अ स्थिति तथा धातु को द्वित्व होकर गोपायाम्+कृ+कृ+अ स्थिति है। तब–

18.8 उरत्॥ (7.4.66)

सूत्रार्थ - प्रत्यय परे होने पर अभ्यास के ऋकार के स्थान पर अत् आदेश हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र से अभ्यास के ऋकार को अत् किया जाता है। इस सूत्र से दो पद हैं। उः (6/1) (ऋकार की षष्ठी), अत् (1/1)। लोपोऽभ्यासस्य सूत्र से अभ्यासस्य (6/1) पद आता है। यहां अंगस्य का अधिकार है। प्रत्यय परे होने पर अंग संज्ञा उत्पन्न होती है। प्रत्यये से सप्तम्यन्त पद का आक्षेप किया। इसे अंगाक्षिप्त कहा जाता है। पदयोजना - अंगस्य अभ्यासस्य उः अत् प्रत्यये। सूत्रार्थ होता है - प्रत्यय परे होने पर अभ्यास के ऋकार के स्थान पर अत् (ह्रस्व अ) होता है। ऋकार के स्थान पर उरण्परपरः सूत्र से रपर होता है। अतः अर् आदेश होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय -पूर्व में गोपायाम्+कृ+कृ+अ स्थिति में यहां णल् प्रत्यय परे होने पर कृ अभ्यास के ऋकार के स्थान पर अत् तथा उरण्परपरः से रपर अर् तथा हलादि शेषः होकर गोपायाम्+क+कृ+अ स्थिति बनी। यहां अभ्यास के ककार को कुहोश्चुः सूत्र से ककार को चकार करके गोपायाम्+च+ कृ+अ। णल् णित् होने से अचोर्णिति सूत्र से कृ के; को वृद्धि आर् होकर गोपायाम्+च+कार्+अ तथा मोऽनुस्वारः सूत्र में मकार को अनुस्वार होकर **गोपायांचकार** तथा अनुस्वार को विकल्प से पदसवर्ण होकर **गोपायाञ्चकार** रूप सिद्ध होता है।

गोपायांचक्रतुः- लिट् प्रथमपुरुष द्विवचन की विवक्षा में पूर्ववत् गोपायाम् कष्ट अतुस् स्थिति में द्वित्व का बाधकर इको यणचि से यण् प्राप्त किन्तु द्विवचनेऽचि से निषेध उसके बाद द्वित्व व अभ्यासकार्य होकर गोपायाम् चकष्ट अतुस्। इस स्थिति में इको यणचि से यण्, सकार को रुत्व विसर्ग गोपायाम् चक्रतुः तथा मोऽनुस्वारः सूत्र में मकार को अनुस्वार होकर **गोपायांचक्रतुः** तथा अनुस्वार को विकल्प से पदसवर्ण होकर **गोपायाञ्चक्रतुः** रूप सिद्ध होता है।

गोपायांचक्रतुः- लिट् प्रथमपुरुष बहुवचन की विवक्षा में पूर्ववत् प्रक्रिया से **गोपायांचक्रुः**, **गोपायाञ्चक्रुः** रूप सिद्ध होते हैं।

गोपायांचक्रर्थः :- लिट् मध्यमपुरुष एकवचन की विवक्षा में पूर्ववत् गोपायाम् कष्ट थ। स्थिति में आर्धधातुकस्येड् वलादेः से थल् को इट् का आगम प्राप्त एकाच् उपदेशेऽनुदात्तात् सूत्र से निषेध। उसके बाद द्वित्व व अभ्यासकार्य होकर गोपायाम् चकष्ट थ । सार्वधातुकार्धधातुकयोः से इगन्त को गुण एवं उरण्परपरः से रपर होकर गोपायाम् चकर्थ तथा मोऽनुस्वारः सूत्र में मकार को अनुस्वार होकर **गोपायांचक्रर्थः** तथा अनुस्वार को विकल्प से पदसवर्ण होकर **गोपायाचक्रर्थः** रूप सिद्ध होता है।

गोपायांचक्रथुः- लिट् मध्यमपुरुष द्विवचन की विवक्षा में पूर्ववत् गोपायाम् कष्ट अथुस् स्थिति में द्वित्व व अभ्यासकार्य होकर गोपायाम् चकष्ट अथुस्। इस स्थिति में इको यणचि से यण्, सकार को रुत्व विसर्ग गोपायाम् चक्रथुः तथा मोऽनुस्वारः सूत्र में मकार को अनुस्वार होकर **गोपायांचक्रथुः** तथा अनुस्वार को विकल्प से पदसवर्ण होकर **गोपायाचक्रथुः** रूप सिद्ध होता है।

गोपायांचक्र- लिट् मध्यमपुरुष बहुवचन की विवक्षा में अ प्रत्यय में पूर्ववत् प्रक्रिया से **गोपायांचक्र, गोपायाञ्चक्र** रूप सिद्ध होते हैं।

गोपायांचकार- लिट् उत्तमपुरुष एकवचन की विवक्षा में मिप् का णल् में पूर्ववत् प्रक्रिया से गोपायाम् कष्ट अ स्थिति में णलुत्तमो वा सूत्र से विकल्प में णित् होने से अचो ञ्णिति से वृद्धि आर् होकर **गोपायांचकार** तथा णित् अभाव में सार्वधातुकार्धधातुकयोः से इगन्त को गुण होकर **गोपायांचकार** रूप सिद्ध होता है।

गोपायांचकष्टव, गोपायांचकष्टम - लिट् उत्तमपुरुष द्विवचन व बहुवचन में पूर्ववत् प्रक्रिया से गोपायाम् कष्ट व स्थिति में असंयोगाल्लिट् कित् से द्विवचन व बहुवचन में गुण निषेध होकर **गोपायांचकष्टव, गोपायांचकष्टम** रूप सिद्ध होता है।

अस् धातु से अनुप्रयोग- अस् धातु से अनुप्रयोग में गोपायाम् अस् अ स्थिति में द्वित्व एवं हलादि शेषे से गोपायाम् अ अस् अ स्थिति बनती है। इस स्थिति में अत आदेः से आदि अत् को दीर्घ होकर गोपायाम् आ अस् अ तथा अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ होकर **गोपायामास** रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार अस् धातु से अनुप्रयोग में रूप -

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	गोपायामास	गोपायामासतुः	गोपायामासुः
मध्यपुरुषः	गोपायामासिथ	गोपायामासथु	गोपायामास
उत्तमपुरुषः	गोपायामास	गोपायामासिव	गोपायामासिम

भू धातु से अनुप्रयोग में रूप -

	एकवचनम्	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमपुरुषः	गोपायांबभूव, गोपायाम्बभूव	गोपायांबभूतुः, गोपायाम्बभूतुः	गोपायांबभूवुः, गोपायाम्बभूवुः
मध्यपुरुषः	गोपायांबभूविथ, गोपायाम्बभूविथ	गोपायांबभूवतुः, गोपायाम्बभूवतुः	गोपायांबभूव, गोपायाम्बभूव
उत्तमपुरुषः	गोपायांबभूव, गोपायाम्बभूव	गोपायांबभूविव, गोपायाम्बभूविव	गोपायांबभूविम, गोपायाम्बभूविम

टिप्पणियाँ

आयाभावपक्ष में गुप् धातु के रूप-

जुगोप- गुप् धातु से आयादय आर्धधातुके वा सूत्र से विकल्प में आयाभावपक्ष में गुप् लिट्, तिप् को णल्। द्वित्व गुप् गुप् अ अभ्यास संज्ञा में हलादिः शेषे ,कुहोश्चुः से गकार को जकार जु गुप् अ एवं पुगन्तलघूपधस्य से लघूपधा को गुण होकर **जुगोप** रूप सिद्ध होता है। द्विवचन व बहुवचन में असंयोगाल्लिट् कित् से क्ङिति च गुण निषेध होता है अन्य रूपों में पूर्ववत् कार्य होते है।द्विवचन में **जुगुपतुः** व बहुवचन में **जुगुपुः** रूप सिद्ध होते हैं।

गुप् धातु से मध्यमपुरुष एकवचन की विवक्षा में लिट् में सिप्, सिप् को थल्, स्थिति में आर्धधातुकस्येड् वलादेः से थल् को इट् का आगम प्राप्त। गुप् धातु अननुदात्त होने से इट् आगम का निषेध नहीं होता । तब-

18.9 स्वरतिसूतिसूयतिधूदितो वा॥ (7.2.44)

सूत्रार्थ - स्वरति आदि और ऊदित धातुओं से परे वलादि आर्धधातुक को विकल्प से इट् हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधिसूत्र से विकल्प से इट् का विधान होता है। इस सूत्र में दो पद है। स्वरतिसूतिसूगतिधूञूदितः (5/1), वा अव्ययपद। आर्धधातुकस्येड् वलादेः समग्र सूत्र की अनुवृत्ति है। ऊत् इति यस्य स ऊदित्। स्वरतिः च सूतिः च सूयतिः च धुञ् च ऊदित च इति स्वरतिसूतिसूयतिधूदित् इति समाहारद्वन्द्वसमासः। तस्मात् स्वरतिसूतिसूयतिधूदितः। सूत्रार्थ होता है - स्वरति, सूति, सूयति, धू और ऊदित् धातुओं से परे वलादि आर्धधातुक को विकल्प से इट् का आगम होता है।

स्वरति-स्वृ ष्टाब्दोपतापयोः (भ्वादि, प.प.)। सूति-षूङ् प्राणिगर्भनिमोचने (अदा, आ.प.)। सूयति-षूङ् प्राणिप्रसवे (दिवा. आ.प.)। धूञ्-धूञ् (कम्पने) (स्वादि-क्यादि उ.प.)। ऊदित-गुपूँ गाहूँ, आदि धातुओं का ग्रहण होता है।

उदाहरण - जुगोपिथ। जुगोप्थ।

सूत्रार्थसमन्वय - पूर्व सूत्रों के अनुसार लिट् में गुप्+थ स्थित में आर्धधातुकस्येड् वलादेः से थल् को इट् का आगम प्राप्त तथा इस सूत्र से विकल्प से इट् आगम होकर, इट् आगम पक्ष में गुप्+इ+थ द्वित्व, अभ्यास कार्य में जुगुप्+इथ तथा लघूपधा गुण करके जुगोपिथ रूप सिद्ध होता है। इट् अभाव पक्ष में गुप्+थ स्थिति में द्वित्व, अभ्यासकार्य तथा लघु उपधा को गुण करके जुगोप्थ रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार अन्य रूप समझने चाहिए।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	जुगोप	जुगुपतुः	जुगुपुः
मध्यम पुरूष	जुगोपिथ/जुगोप्थ	जुगुपथुः	जुगुप
उत्तम पुरूष	जुगोप	जुगुपिव/जुगुप्व	जुगुपिम/जुगुप्म

पाठगत प्रश्न 18.2

5. गोपायति रूप में आय प्रत्यय किस सूत्र से आया?
6. गोपायति रूप में सनाद्यन्त धातु कौन है?
7. गोपायति रूप में भूवादयो धातुव से धातु संज्ञा किसकी होती है?
8. आय आदि का विकल्प कहाँ होता है?
9. कास्यनेकाच आम् वक्तव्यः से आम् की इत्संज्ञा है या नहीं।
10. गोपायाम् में गाम् किससे होता है?
11. अतो लोप सूत्र की वृत्ति लिखिए।
12. कृञ् का अनुप्रयोग किस सूत्र से होता है?
13. गोपायाम्बभूव यहाँ भू धातु का अनुप्रयोग किस सूत्र में हुआ?
14. गुप् धातु लिट् लकार का रूप नहीं है।

    1. जुगोपिथ 2. जुगुप्थ 3. जुगुप्म 4. जुगोप्थ

15. गुप् धातु लिट् लकार का रूप नहीं है।

    1. जुगोपिम 2. जुगुप्व 3. जुगुप्म 4. जुगुपिम

18.10 आदेच उपदेशेऽशिति॥ (6.1.45)

सूत्रार्थ - उपदेश में एजन्त धातु के अन्त्य अल् के स्थान पर आकार आदेश होता है परन्तु शित् प्रत्यय का विषय हो तो नहीं होता।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र आत् का विधान होता है। इस सूत्र में चार पद है। आत् (1/1), एचः (6/1), उपदेशे (7/1), अशिति (7/1)। लिटि धातोरनभ्यासस्य सूत्र से धातोः (1/1) पद आता है। ष्ट् इत् शित् इति कर्मधारम समासः। न शित् अशित्, तस्मिन् अशिति इति नञ् तत्पुरूषः समासः। यहां प्रसज्य प्रतिषेध है। उससे शित् में नहीं प्राप्त होता है। धातोः से प्रत्यय में आक्षिप्त किया है। शित् प्रत्यय में नहीं इस विधि से इत्संज्ञक ष्टाकारदि प्रत्यय परे न हो यह अर्थ प्राप्त होता है। आत् से परे करण है। केवल आ टाप् है। एचः धातोः से एच् धातु का विशेषण है। अत तदन्त विधि से एजन्त धातु यह अर्थ प्राप्त होता है। सूत्रार्थ होता है। उपदेश में जो एजन्त धातु है, उसके स्थान पर आत् (आकार) आदेश होता है। परन्तु शित् का विषय हो तो नहीं होता। अलोऽन्त्यस्य की परिभाषा से यह आदेश एजन्त धातु के अन्त्य अत् के स्थान पर होता है।

टिप्पणियाँ

उदाहरण - ग्लायति।

सूत्रार्थ समन्वय - ग्लै हर्षक्षये धातु से लिट्, लिट् के स्थान पर तिप्, टाप् आगम, शित् होने से यह सूत्र प्रवृत्त नहीं होता। उसके बाद ग्लै+अ+ति स्थिति में अयादि आदेश होकर ग्ल्+आय्+अ+ति=ग्लायति रूप सिद्ध होता है।

ग्लै धातु से लिट्, तिप् के स्थान पर गल् होकर ग्लै+अ स्थिति में यहां शित् न होने से प्रकृत सूत्र से ऐकार को आ होकर ग्ला+अ रूप बनता है, द्वित्व-ग्ला-ग्ला+अ-अभ्यास कार्य हलादि टोप्- ज ग्ला+अ स्थिति होती है। तब

18.11 आत औ णलः॥ (7.1.34)

सूत्रार्थ - आकारान्त धातु से परे णल् के स्थान पर औकार आदेश हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से औकार आदेश का विधान किया जाता है। इस सूत्र में तीन पद है। आतः (5/1), औ (1/1), णलः (6/1)। अंगस्य का अधिकार आता है। अंगात् से पंचम्यन्त से विपरिणमत है। आतः अंगात् से आत् अंग का विशेषण है।अतः तदन्त विधि से आदन्त अंग अर्थ प्राप्त होता है। सूत्रार्थ होता है - आदन्त अंग से परे णल् के स्थान पर औकार आदेश होता है। णल् परे होने पर आदन्त अंग धातु ही हो सकता है। अतः आदन्ताद् धातोः कह सकते है।

उदाहरण - जग्लौ

सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्त सूत्रों से जग्ला+अ स्थिति में आदन्त धातु ग्ला है। अतः प्रकृत सूत्र से णल् को आकार आदेश होकर जग्ला+औ तथा वृद्धिरेचि से वृद्धि होकर जग्लौ रूप सिद्ध होता है।

18.12 गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि॥ (6.4.98)

सूत्रार्थ - गम्, हन्, जन्, खन् और घस् इन पाँच धातुओं की उपधा का लोप हो जाता है अङ् से भिन्न अजादि कित् ङित् प्रत्यय परे हो तो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र से उपधा लोप होता है। इस सूत्र में चार पद है। गमहनजनखनघसाम् (6/3), लोपः (1/1), क्ङिति (7/1), अनङि (7/1)। अचिष्टश्नुधातुभ्रुवां वोरियङुवङौ सूत्र से अचि (1/1) पद की अनुवृत्ति है। ऊदुपधाया गोह सूत्र से उपाधायाः (6/1) पद आता है। अंगस्य का अधिकार है। इससे अंगाक्षिप्तं प्रत्यय पद प्राप्त होता है। क् च् ङ च क्ङौ। क्ङौ इतौ यस्य स क्ङित्, तस्मिन् क्ङिति इति द्वन्द्वगर्भबहुव्रीहिसमासः। गमः च हनः च जनः च खनः च घस् च इति गमहनजनखनघसः तेषा गमहनजनखनघसाम् इति इतरेतयोगद्वन्द्वसमासः। गमादि में अकार उच्चाराणार्थ है। सूत्रार्थ होता है -गम् हन् जन् खन् घस् इन की उपधा का लोप होता है अजादि अङ् प्रत्यय भिन्न कित् ङित् प्रत्यय परे हो तो।

उदाहरण - जग्मतुः।

सूत्रार्थ समन्वय - गम्लृष्ट गतौ धातु से लिट् को तिप्, तिप् को णल् होकर गम्+अ स्थिति में द्वित्व अभ्यास कार्य होकर जगम्+अ स्थिति में उपधा वृद्धि होकर **जगाम** रूप सिद्ध होता है।

गम् धातु से लिट्, लिट् को तस्, तस् को अतुस् होकर गम्+अतुस्, द्वित्व, अभ्यास आदि कार्य होकर जगम्+अतुस्। यहां अतुस् अपित् होने से असंयोगात् लिट् कित् से कित् होता है। अङ भिन्न अजादि अतुस् प्रत्यय है। अतः प्रकृत सूत्र से उपधा लोप तथा स् को विसर्ग होकर **जग्मतुः** रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न 18.3

1. ग्लापति में धातु क्या है?
2. जग्लौ में औकार कैसे हुआ?
3. जग्मतुः में उपधा लोप किस सूत्र से है?
4. गम् धातु से लिट् में तस् में क्या रूप होता है?

पाठ का सार

इस पाठ में लिट् लकार को कुछ सूत्र उपस्थित किये है। उसमें अभ्यास लोप, अकार को एत्व आदि कार्यों के सूत्र दिये गये। अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि सूत्र से कित् लिट् प्रवृत्त होता है थल् के कित्वाभाव से यह प्रवृत्त नहीं होता। पाणिनी मुनि ने अत् से थल् में इट् का विधान सूत्रों से किया है।

गुपूधूपविच्छिपणिनिभ्यः आयः सूत्र से गुप् आदि धातु से स्वार्थ में आय प्रत्यय का विधान है। उस से नवीन शब्द स्वरूप निष्पन्न होते हैं। उसकी सनाद्यन्ता धातवः से धातु संज्ञा होती है। उसके बाद धातु संज्ञा आश्रित कार्यकलित होते हैं। जो धातु अनेकाच् होती है उससे आम् प्रत्यय कास्यनेकाच आम् वक्तव्यः सूत्र से होता है। आम् मित् नहीं है। इससे आमन्त होने से कृञ् चानुप्रयुज्यते लिटि सूत्र से कृ भू एवं अस् का अनुप्रयोग किया जाता है। उससे गोपायो्चकार, गोपायामास गोपायाम्बभूव आदि रूप सिद्ध होते हैं।

आर्धधातुक को विकल्प से इट् विधायक सूत्र स्वरतिसूतिसूयतिधृदितो वा है। उपदेश में जो धातु एजन्त है उस के एच् को आकार होता है यदि शित् प्रत्यय पर नहीं हो। गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि सूत्र से अजादि में अङ् भिन्न कित् ङित् प्रत्यय परे गम् हन् जन् खन् घस् के उपधा का लोप होता है।

पाठांत प्रश्न

1. अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. नदेतुः तेदुः, नेदिथ, नेदिम को ससूत्र रूप सिद्ध कीजिए।
3. कष्टञ् चानुप्रयुज्यते लिटि सूत्र की व्याख्या कीजिए।
4. कास्यनेकाच आम् वक्तव्यः सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. गोपायति, गोपायामि, गोपायाञ्चकार, गोपायाम्बभूव, गोपायामास, जुगोप, जुगुपुः, जुगोपिथ को ससूत्र रूप सिद्ध कीजिए।
6. आदेच उपदेशेऽशिति सूत्र की व्याख्या कीजिए।
7. जग्लौ जग्मतुः जगम जगाम को ससूत्र रूप सिद्ध कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

18.1

1 अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि।

2 थलि च सेटि।

3 लिट् को निमित्त मानकर जिस अंग के आदि में कोई आदेश नहीं हुआ उस अंग के, असंयुक्त हलों के मध्य में स्थित अत् के स्थान पर एकार आदेश हो जाता है और साथ ही अभ्यास का लोप भी हो जाता है कित् लिट् परे हो तो।

4 3

18.2

1. गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः।
2. गोपाय।
3. गुपू रक्षणे।
4. आर्धधातुक की विवक्षा में विकल्प से आय होता है।
5. 5

6. कास्यनेकाच आम् वक्तव्यः।

7. आर्धधातुक प्रत्यय परे होने पर, आर्धधातुक प्रत्यय के उपदेश के समय जो अदन्त अंग उसके अन्त्य अत् का लोप हो जाता है।

8. कष्टञ् चानुप्रयुज्यते लिटि।

9. कष्टञ् चानुप्रयुज्यते लिटि।

10. 2

11. 1

18.3

1. ग्लै हर्षक्षये।

2. टात औ णलः सूत्र से णल् को औकार।

3. ग्महनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि।

4. जग्मतुः।